अपवित्रता से बचें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो! आज हम फिर से पवित्र शास्त्र पर ध्यान देंगे और उस विषय पर विचार करेंगे: अपवित्रता और उससे बचने का तरीका।

ईसाई धर्म में खाने-पीने को लेकर अक्सर बहस होती है। कुछ लोग मानते हैं कि कुछ खाने की चीजें “अपवित्र” हैं, जबकि कुछ का मानना है कि सभी भोजन स्वीकार्य हैं। इससे अक्सर विवाद पैदा होते हैं।

लेकिन यदि हम बाइबल ध्यान से पढ़ें, तो समझेंगे कि खाना खुद किसी को अपवित्र नहीं बनाता। हालाँकि, हर चीज़ लाभकारी नहीं होती लकड़ी, लोहे, जहर या शराब खाने से शरीर को नुकसान होता है।

1 कुरिन्थियों 10:23
“सब कुछ अनुमत है; पर सब कुछ लाभकारी नहीं है। सब कुछ अनुमत
है; पर सब कुछ निर्मित नहीं करता।”

यदि आपने देखा कि जो आप खा रहे हैं वह आपके शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाता, तो खाइए यह पाप नहीं है। यदि यह हानिकारक है या आपको

अपवित्रता से बचें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

संदेह है, तो इसे न खाएं। भले ही आप इसे न खाएं, आप पाप में नहीं हैं।

रोमियों 14:22–23
“अपने विश्वास को अपने हृदय में परमेश्वर के सामने बनाए
रखो। धन्य है जो जो कुछ स्वीकृत करता है, उसके लिए आत्मा का निर्णय नहीं करता। परन्तु जो संदेह करता है और खाता है, वह निंदा में है, क्योंकि उसने विश्वास से नहीं खाया। और जो कुछ विश्वास से नहीं होता, वह पाप है।”

आज हम अधिक ध्यान भोजन की स्वीकृति या निषेध पर नहीं देंगे। मुख्य बात यह है कि सच्ची अपवित्रता क्या है और उससे कैसे बचा जाए, जैसा यीशु ने सिखाया।

मरकुस 7:5,14–16
“फिर फ़रिसियों और शास्त्रियों ने उससे पूछा: ‘तेरे शिष्य पुराने लोगों की परंपराओं के अनुसार क्यों नहीं चलते, बल्कि गंदे हाथों से भोजन करते हैं?’ … और उसने फिर सबको बुलाया और उनसे कहा: ‘सब ध्यान से सुनो और समझो! मनुष्य के अंदर से बाहर आने वाली कोई चीज़ उसे अपवित्र नहीं करती; बल्कि जो बाहर से आता है, वही मनुष्य को अपवित्र बनाता है। जो कान सुन सकते हैं, वे सुनें!’”

अपवित्रता से बचें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यीशु ने यह वचन बड़ी सभा को कहा, जिसमें उनके बारह शिष्य भी शामिल थे। संदेश स्पष्ट था: मनुष्य को अपवित्र बनाने वाली चीज़ें भीतर से आती हैं, बाहर से नहीं। बहुत से लोग इसे गलत समझ गए और सोचने लगे कि यह केवल भोजन या शारीरिक अपशिष्ट से संबंधित है।

पुर्व में यीशु ने अपने शिष्यों को विस्तार से समझाया:

मरकुस 7:17–23
“जब वह सभा से घर आया, तो शिष्यों ने उससे इस दृष्टांत के
बारे में पूछा। उसने कहा: ‘क्या तुम भी समझ में नहीं लाए?
क्या तुम नहीं जानते कि बाहर से मनुष्य के अंदर जाने वाली कोई चीज़ उसे अपवित्र नहीं कर सकती? वह उसके हृदय में नहीं जाती, बल्कि पेट में जाती है और शौचालय में निकल जाती है। इस प्रकार उसने सभी खाद्य वस्तुओं को शुद्ध घोषित किया। और उसने कहा: जो मनुष्य के भीतर से आता है, वही उसे अपवित्र बनाता है। क्योंकि मनुष्यों के हृदय से बुरे विचार निकलते हैं: व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लालच, बुराई, कपट, असाधुता, ईर्ष्या, अपशब्द, घमंड, मूर्खता। ये सब बुराइयाँ भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अपवित्र बनाती हैं।”

अपवित्रता से बचें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

सभा ने इसे गलत समझा वे सोचते थे कि अपवित्रता पसीने, उल्टी या मल-मूत्र से आती है। लेकिन यीशु ने सिखाया कि अपवित्रता हृदय से आती है।

उदाहरण के लिए, अगर आप गालियाँ सुनते हैं, तो वह आपके स्मृति में रहती हैं यह आपको अपवित्र नहीं बनाती। लेकिन अगर आप उन्हें दूसरों पर इस्तेमाल करते हैं, तो अपवित्रता उत्पन्न होती है। यही बात हत्या, गर्भपात या अन्य पापों पर भी लागू होती है: केवल देखने से अपवित्रता नहीं आती; करने या करने की सलाह देने से आती है।

पुराने नियम में, अपवित्र व्यक्ति परमेश्वर की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता था, जब तक वह शुद्ध न हो। आज भी यही सत्य है: जो व्यक्ति पाप में रहता है चाहे शराब पीना हो, व्यभिचार, हत्या, गाली-गलौज, अश्लील सामग्री देखना, या बदनाम करना वह परमेश्वर के सामने अपवित्र है, चाहे वह कई सालों से ईसाई क्यों न हो। केवल वास्तविक पश्चाताप से शुद्धि संभव है।

तीतुस 1:15–16
“शुद्ध लोगों के लिए सब कुछ शुद्ध है; परन्तु अपवित्र और अविश्वासी के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है; उनका मन और उनकी सोच अपवित्र है। वे कहते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, पर
अपने कर्मों से उसे नकारते हैं। वे घृणास्पद हैं,

अपवित्रता से बचें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

अवज्ञाकारी और किसी भी अच्छे काम के योग्य नहीं हैं।”

यदि आप अभी तक उद्धार प्राप्त नहीं कर पाए हैं: मसीह आपसे प्रेम करते हैं और आपके लिए मृत्यु को सह गए। उद्धार आज मुफ्त उपलब्ध है। जहाँ आप हैं, वहाँ घुटने टेकें और अपने पापों को ईमानदारी से परमेश्वर के सामने स्वीकार करें। यदि आप इसे दिल से करते हैं, तो वह आपको सुन चुका है और आपको क्षमा कर देगा। परमेश्वर की शांति आपके हृदय में आएगी।

इसके बाद पवित्र जलस्नान (बपतिस्मा) लें (यूहन्ना 3:23) हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर (मत्ती 28:19; प्रेरितों के काम 2:38)। ऐसा करके आप स्वर्ग के सामने अपनी पुनरुत्थान की गवाही देते हैं और मसीह की सच्ची पवित्रता आपके जीवन में काम करेगी।

प्रभु आपका कल्याण करें।

Share on:
WhatsApp